• कविताएं...

समय के निशान ...

एक अर्से बाद जब
तुम्हारे अक्षरों
से मुलाक़ात हुई
वे वैसे नहीं लगे
जैसे वे मेरे पास हैं
भविष्य के सपने देखते
मेरे अक्षर भी तो
रोशनी के अंधेरे
से जूझ रहे हैं
अब तो खुद से मिलना भी
अपने को बहुत
दुखी करना है
यह सब जानते हुए भी
एक ख़त अपने
दोस्त को लिखा
और उसे बहुत
उदास कर दिया
पत्र पाने की
खुशी के बावजूद
सचमुच समय चाहे
जितनी तेजी से
नाप ले डगर
अमिट ही रह जाते हैं
उसके कदमों
के निशान।

■ रश्मि रेखा

हम...

अगर आपने
उन्नति के पांव
उलटी तरफ मोड़े हैं
मानवी बुनावट के ताने-बाने
तोड़े हैं
अगर आपकी नीतियां
जनता के भाग्य पर
बजर रहे कोड़े हैं
अगर लकड़बग्घे
और गधे
आपके रथ के
घोड़े हैं
तो भले हम टूटे हैं
बिखरे हैं थोड़े हैं
आपकी राह में
सबसे बड़े रोड़े हैं
आपके निज़ाम में
जिन नामुरादों को
नहीं होना था
हम वही हैं
हमारी गलती है
कि सही हैं
अगर आप सरकार हैं
तो, हां, हम गद्दार हैं!

■ राकेश रंजन

• कहानी/-धर्मवीर भारती

अमृत की मृत्यु

सामने रखे हुए अग्निपात्र से सहसा एक हलके नीले रंग की लपट उठी और बुझ गयी। दूसरी लपट उठी और बुझ गयी। उसके बाद ही दहकते हुए अंगारे चिटखने लगे और उनमें से बड़ी-बड़ी चिनगारियाँ निकलकर कक्ष में उड़ने लगीं।

अग्निपात्र के सामने बैठा था एक भिक्षु-काषाय वस्त्र, चौड़ा भाल, लम्बी और गठी हुई भुजाएँ - अपलक दृष्टि से देख रहा था वह अग्निपात्र को आग पर धातु के पात्र में कुछ द्रव पदार्थ उबल रहा था। चिनगारियाँ उड़ते ही उसने धातु के पात्र से थोड़ा-सा द्रव एक स्वर्णपात्र में ढाला। उसका रंग मदिरा की भांति लाल था। उसने बड़े ध्यान से देखा। कहीं-कहीं उसमें सफेद बूँदें तैर रही थीं। वह प्रसन्नता से हँस पड़ा - 'बस थोड़ी देर और!' वह गद्गद स्वर में बोला- 'और, और फिर मैं अमृत का स्वामी बन जाऊँगा। अमृत केवल पुराणों की कल्पना न होगी वह होगा इस जीवन का यथार्थ। अमृत की लहरें इस पात्र में इठलाती हुई नाचेंगी!' उसने पात्र फिर अग्नि पर रख दिया।

द्वार पर कुछ आहट हुई। एक भिक्षु ने प्रवेश किया।

'क्या है?'

'अनावश्यक बाधा के लिए आचार्य क्षमा करें; एक नारी आपसे मिलना चाहती है?'

'नारी! अमृत और नारी!! क्या साम्य है? कह दो मुझे अवकाश नहीं है!'

'किन्तु वह कह रही है कि आचार्य भव्य से मिले बिना मैं न लौटूंगी!' भिक्षु ने कहा-

'किन्तु मुझे अवकाश नहीं!' आचार्य भव्य ने कहा और अपने कार्य में लग गये। भिक्षु खड़ा ही रहा - 'नहीं गये तुम? अच्छी विवशता है! अच्छा, उसे भेज दो।'

भिक्षु बाहर गया। द्वार खुला। भव्य ने देखा, द्वार पर थी एक नारी; असीम रूप, अपार सौन्दर्य, अनन्त मादकता। हलका गुलाबी रेशमी अधोवस्त्र, कमर में एक लम्बा मृणाल नागिन की भाँति लिपटा था, जिसके सिरे पर नीलकमल की अधखिली कलियाँ झूल रही थीं। वक्ष पर चम्पई रंग का वस्त्र था। अंगों से पराग के अंगराग का तीखा सौरभ उड़ रहा था। पीछे के केशों को उलटकर बायीं ओर हटकर जूड़ा बँधा था। और उस पर मौलश्री की माला लपेट दी गयी थी। रमणी ने अधखुली मुसकराती पलकों से भव्य की ओर देखा और नम्रता से नमस्कार किया।

भव्य! भव्य जैसे मन्त्रमुग्ध - सा हो रहा था। उससे नमस्कार का प्रत्युत्तर भी देते न बना। उसकी दृष्टि जैसे जम-सी गयी हो।

पास के वातायन से बसन्ती बयार का एक झोंका आया और कक्ष में सद्य: विकसित रसाल-मंजरी का मादक सौरभ बिखरेता हुआ चला गया। भव्य ने पवन की गुदगुदी का अनुभव किया। उसी समय पास में रखा हुआ अग्निपात्र फिर दहक उठा। भव्य का ध्यान उधर आकर्षित हुआ। देखा अमृत का गहरा लाल रंग फीका पड़ता जा रहा है, द्वार पर नारी जो थी। नारी ने वीणा विनिन्दित स्वर में कहा- 'नमस्कार!'

आचार्य नागार्जुन ने हाथ उठाकर चारों ओर उमड़ते हुए प्रश्नों को रोका। भिक्षुकों के प्रश्नातुर अधर काँपकर रुक गये। आचार्य ने पैनी दृष्टि से चारों ओर देखा और हँसकर बोले - 'भिक्षुओ! उत्तर और प्रत्युत्तर, विकल्प और विचार, तर्क और वितर्क से जीवन के सत्य का निरूपण नहीं हो सकता। तर्कों से जीवन की जिस सत्ता का स्पष्ट संकेत तुम्हें मिलता है सम्भव है गहनतर तर्कों से कोई उन संकेतों को असत्य सिद्ध कर दे। जिसे हम आज असम्भव समझते हैं, सम्भव है कालान्तर में वही सम्भव हो जाये। मनुष्य का जीवन इतना छोटा है, मनुष्य की बुद्धि इतनी सीमित है, मनुष्य की कल्पना इतनी भ्रमात्मक है कि हम सत्य का मूलरूप देखने से वंचित रह जाते हैं। हमें जो वस्तु सत्य लगती है वही दूसरे को असत्य। अत: हम न यह कह सकते हैं कि यह वस्तु है, और न यही कह सकते हैं कि यह वस्तु नहीं है। न हमें यही ज्ञात है कि इन वस्तुओं में अस्तित्व और अनस्तित्व समान रूप से व्याप्त हैं। यही चरम अज्ञान हमारा एकमात्र ज्ञान है सत्य की इसी अनिर्वचनीयता का नाम शून्य है। इसी शून्य की साधना, अपने को अस्तित्व और अनस्तित्व से भी ऊपर उठाना, हमारी गति का लक्ष्य है। यह सभी प्रश्नों का उत्तर है बस!'

जो मनुष्य स्वयं स्थित नहीं वह निरूपण कर ही कैसे सकता है ? 'ठीक है भव्य; किन्तु मनुष्य की सत्ताशीलता को मैं अस्वीकृत तो नहीं करता। हाँ, ब्राह्मणों की भाँति उसमें आत्मा अवश्य नहीं मानता!'

'आत्मा नहीं!' यदि शरीर का अस्तित्व भी है तो कितना नगण्य! सारा जीवन बिताकर जब हम सत्य की एकाध झलक पाते हैं, आकर्षित होकर उस ओर बढ़ते हैं, उसी क्षण मृत्यु का काला अँधेरा हमें चारों ओर से घेर लेता है...

नागार्जुन उठ खड़े हुए। सभा विसर्जित हो गयी। आचार्य अपनी कुटी में जा ही रहे थे कि एक भिक्षु ने आकर नमस्कार किया।

'कौन भव्य? क्या है वत्स?'

'एक शंका है आचार्य; और उसका समाधान आपको करना ही होगा।'

'क्या प्रश्न है?' आचार्य ने स्नेह से पूछा-

'आचार्य! सत्य का निरूपण बिना अपनी सत्ता के स्थापित किये और हो ही कैसे सकता है?

जो मनुष्य स्वयं स्थित नहीं वह निरूपण कर ही कैसे सकता है ? 'ठीक है भव्य; किन्तु मनुष्य की सत्ताशीलता को मैं अस्वीकृत तो नहीं करता। हाँ, ब्राह्मणों की भाँति उसमें आत्मा अवश्य नहीं मानता!'

'आत्मा नहीं!' यदि शरीर का अस्तित्व भी है तो कितना नगण्य! सारा जीवन बिताकर जब हम सत्य की एकाध झलक पाते हैं, आकर्षित होकर उस ओर बढ़ते हैं, उसी क्षण मृत्यु का काला अँधेरा हमें चारों ओर से घेर लेता है। क्या हम अमर नहीं हो सकते?'

'असम्भव है भव्य!'

'कभी-कभी असम्भव भी सम्भव हो जाता है आचार्य! आज मैं आपको एक रहस्य बताऊँ। विन्ध्यपथ में मुझे एक भोजपत्र मिला था। उस लिपि का अध्ययन करने के बाद उसमें कुछ ऐसे संकेत मिले हैं कि अमृत का निर्माण सम्भव है।'

नागार्जुन चौंक पड़े।

'सच! भव्य तुम मेरे योग्य शिष्य हो। देखता हूँ मेरे पश्चात मठ की रसायनिक परम्परा को तुम बनाये रख सकोगे। प्रयत्न करो वत्स! मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है?'

बाल भिक्षु तरुण हुआ। नागार्जुन के बाद आचार्य बना और अमृत के प्रयोग में लग गया...।

उसने देखा कि द्रव का गहरा लाल रंग फीका पड़ता जा रहा है...'

सहसा रमणी ने वीणा - विनिन्दित स्वर में कहा- 'नमस्कार आचर्य!' भव्य ने सजग होकर कहा, 'आशीर्वाद भद्रे! तुम्हारा परिचय?'

'आचार्य मुझे नहीं जानते। किन्तु जिस समय मैं गोपाल को जगाने के लिए प्रभाती गाती हूँ उसी समय आचार्य मन्दिर के पार्श्ववर्ती राजमार्ग को पवित्र करते हुए जाते हैं और मुझे गान के लिए एक पुनीत प्रेरणा मिल जाती है।'

'अहो! तुम वैष्णव मन्दिर की देवदासी, अंजलि! मैंने तुम्हारे विषय में सुना था। कहो, क्या बात है?'

'आज फाल्गुन की पूर्णमासी है आचार्य! और नवपत्रिका का उत्सव हम लोग आपके संघाराम में मनाने की आज्ञा चाहते हैं।'

'किन्तु तुम जानती हो देवदासी, उत्सवों और नाटकों में भिक्षुओं का भाग लेना वर्जित है, फिर मैं तुम्हें कैसे आज्ञा दे दूँ? इसका उन पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है देवि!'

'उत्सवों का बुरा प्रभाव! आश्चर्य है देव। जीवन भर क्षण-क्षण दु:ख की ज्वाला में सुलगता हुआ मनुष्य कभी उस कष्ट की यातना को जीत कर मुसकरा पड़े, हँस दे, तो उसमें भी कोई पाप है?'

'हाँ है?' भव्य ने कहा--'यह उत्सव, यह आनन्द मनुष्य को जीवन की उपेक्षा सिखलाता है। मनुष्य का जीवन नश्वर है और यह अपनी इस क्षणिकता को भूलकर जीवन के काल्पनिक सुखों में डूबकर वास्तविक साधना को भूल जाता है।'

'क्या दु:ख और मृत्यु यही जीवन की सीमाएँ हैं? तुमने जीवन की बड़ी संकुचित व्याख्या बना रखी है आचार्य! मनुष्य को इतना दुर्बल, इतना छोटा मत बनाओ भव्य! इसमें मानव की मानवता का अपमान होता है। किन्तु तुम तो आत्मा के अस्तित्व को ही नहीं मानते। इसीलिए तुम मनुष्य को साधना का यन्त्र समझ सकते हो पर हमारी दृष्टि में तो साधना मनुष्य के लिए है, मनुष्य साधना के लिए नहीं ! मनुष्य साधना का उद्देश्य है, साधना मनुष्य का उद्देश्य नहीं!'

-जारी

• शायरी...

तुम्हारा नाम ले कर दर-ब-दर होता रहूंगा
कि बरसों दाग़-ए-दिल अश्क़ों से मैं
धोता रहूंगा
तू ख़ुशियां ही समेट और ग़म मुझे दे दे
मैं हूं ना
तिरे हिस्से की ग़मगीनी को मैं रोता रहूंगा

◆ ◆ ◆

जगाया मुंतज़िर आंखों ने बरसों अब ये सोचा
कि मरने का बहाना कर के मैं सोता रहूंगा
मुझे बस एक लम्हा सोचने दो ज़िंदगी भर
किसे पाने की ख़ातिर मैं किस खोता रहूंगा
मिरे शाने थके हारे हैं 'आज़र' सोचता हूं
कहां तक अपने सर का बोझ मैं ढोता रहूंगा

-राशिद 'आज़र'

◆ ◆ ◆

आप करते जो एहतराम-ए-बुतां
बुत-कदे ख़ुद ख़ुदा ख़ुदा करते
रिंद होते जो बा-शुऊर 'अनवर'
क्या बताऊं तुम्हें वो क्या करते

-'अनवर' साबरी

• मेरी क़िस्मत से..

मेरी क़िस्मत से क़फ़स का या तो दर खुलता नहीं
दर जो खुलता है तो बंद-ए-बाल-ओ-
पर खुलता नहीं
आह करता हूं तो आती है पलट कर ये सदा
आशिकों के वास्ते बाब-ए-असर खुलता नहीं
एक हम हैं रात भर करवट बदलते ही कही
एक वो हैं दिन चढ़े तक जिन का दर खुलता नहीं
रफ़्ता रफ़्ता ही नक़ाब उट्ठेगी रू-ए-हुस्न से
वो तो वो है एक दम कोई बशर खुलता नहीं

-'सहर' इश्क़ाबादी